Dr. Vandana Suman
Professor
Dept - of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - (IV) - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Aatman : Nyaya Darshan" 1.

(न्याय दर्शन में आत्मा का स्वरूप)

न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा निराकार है। वह स्पर्शादिगण रहित, ज्ञान अथवा चैतन्य का अमूर्त आश्रय है। वह देश-काल के बन्धनों से मुक्त और सीमातीत है। इसीलिए 'सर्व दर्शन संग्रह' में इसको विभु और नित्य कहा गया है :

अनुवादः धर्मवद्भाव वस्तु यथेष्ठा कालतः। तान्नित्यं विमुर्चै व्यक्तिः यो ऽमनो विमुर्नित्यता॥

वह निरवयव (ह्रास-हम- रहित) है, उत्पत्ति रहित होने के कारण अनादि है और नाशरहित होने के कारण अनन्त है।

न्याय दर्शन में प्रमाण के बाद प्रमेय पदार्थ का निरूपण किया गया है। प्रमेय - विचार न्याय का महत्वपूर्ण अंग है। प्रमा (ज्ञान) का जो विषय है उसे ही 'प्रमेय' कहा जाता है। (प्रमाविषयत्वं प्रमेयत्वम्)। वात्स्यायन के शब्दों में कहा जाय तो 'जिस वस्तु का तत्व जाना जाय वही 'प्रमेय' है (योऽर्थः तत्वतः प्रमीयते तत्प्रमेयम्) यह अर्थ निकलता है। गौतम के 'न्यायसूत्र' में प्रमेय पदार्थ के 12 प्रकार बताये गये हैं। जिनके नाम हैं : 1. आत्मा, 2. - शरीर, 3 - इन्द्रिय, 4. अर्थ, 5. बुद्धि, 6. मन, 7. प्रवृत्ति, 8. - दोष, 9. प्रेत्यभाव, 10. काल,

The harder the conflict, the more glorious the triumph.

11. - दुःख और 12- अपवर्ग।

'आत्मा' प्रमेय पदार्थ का पहला प्रकार है। यह एक अनुभवसिद्ध बात है कि जिस वस्तु को हम छूते हैं उसको देखते भी हैं। तभी तो हमें प्रत्येक वस्तु की प्रत्यभिज्ञा होती है। इसी आधार से यह सिद्ध होता है कि देखना तथा स्पर्श करना आदि जो भिन्न-भिन्न ज्ञान है उनका ज्ञाता एक ही है। उसी एकमेव ज्ञाता को किसी ने शरीर किसी ने मन किसी ने इन्द्रिय और किसी ने 'बुद्धि' कहा है, किन्तु नैयायिकों ने इस पृथक सत्ता को आत्मा माना है। नैयायिकों के अनुसार जो स्थिति रथ को हाँकने वाले सारथी की होती है वही स्थिति शरीर को संचालित करने वाले आत्मा की है। वही आत्मा सभी इन्द्रियों का उपभोक्ता है। आत्मा और इन्द्रियों के बीच संदेशवाहन करने का कार्य मन करता है। बुद्धि आत्मा का गुण है। अतएव आत्मा शरीर, इन्द्रियों, मन और बुद्धि से अलग है।
(शरीरेन्द्रियबुद्धिभ्यः पृथग् आत्मा विभुर्ध्रुवः) ।

इस ससीम शरीर के साथ असीम आत्मा का संयोग पूर्व कर्मों के फल का उपभोग

3

करने के निमित्त होता है। (प्रविकृत फलानुबन्धीन)। इसीलिए न्याय में शरीर को आत्मा का भोगायतन (भोग का आश्रय) कहा गया है (आत्मनो भोगायतनं शरीरम्)।

आत्मा का स्वरूप वेदान्त से प्रायः मिलता है; किन्तु वेदान्त और न्याय का इस सम्बन्ध में अलग-अलग मत है। वेदान्त एकात्मवादी दर्शन है और न्याय अनेकात्मवादी। वेदान्त के अनुसार आत्मा एक है; जो उपाधि-भेद से प्रत्येक शरीर में अलग-अलग दृष्टिगोचर होती है; किन्तु न्याय और सांख्य का अभिमत है कि प्रति शरीर में अलग-अलग आत्मा का निवास है।

न्याय में आत्मा के दो भेद माने गये हैं: जीवात्मा और परमात्मा। जीवात्मा अनेक है और प्रत्येक शरीर में वह भिन्न-भिन्न है। आत्मा शब्द का जहाँ भी प्रयोग हुआ है वह जीवात्मा से ही सम्बन्धित है। जहाँ जीवात्मा अनेक है वहाँ परमात्मा एक है। जीवात्मा के इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान-ये छः गुण (लिंग) हैं। जीवात्मा में ये गुण तभी तक बने रहते हैं, जब तक वह शरीर के बन्धन में

There is only one certainty in life and that is that nothing is certain.

27

MONDAY
2025 | OCTOBER

WK 44 | 300-065

9 मुक्त होकर मोक्ष नहीं प्राप्त कर लेता। मोक्ष के बाद वह शान्त निर्विकार, जड़ और संज्ञाशून्य हो जाता है।

10

11

12

1

2

3

4

5

6

7